# द्वितीय अध्याय

## प्रभाकर माचवे जी के प्रमुख नायिकाप्रधान उपन्यासोंका संक्षिप्त परिचय

- `द्वाभा`
- `एकतारा`
- `दर्द के पैबन्द`
- `लक्ष्मीबेन`
- `कहाँ से कहाँ` ।

## द्वितीय अध्याय

### प्रस्तावना --

साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी इसकी गणना प्रथम कोटि की विधाओं में की जाती है। उपन्यास का प्रतिपाद्य जीवन और जगत् होता है। जीवन और जगत् के अत्यधिक निकट होने की वजह से ही उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्य सा बन गया है।

कथावस्तु उपन्यास का प्राण माना जाता है। इसी के माध्यम से उपन्यास की रूपरेखा निर्मित होती है। ' जिज्ञासा उपन्यास का मूल आकर्षण है और वह कहानी तत्व के अभाव में संभव नहीं। सारांश यह है कि प्रत्येक उपन्यास में कहानी होती है -- कहीं विस्तारपूर्वक , कहीं छोटी, कहीं सुगठित, कहीं बिखरी हुई, कहीं रोचक, कहीं बोझिल, कहीं जन-जीवन की बाह्य घटनाओं पर आधारित, तो कहीं अन्तर्गत में घटित होने वाली हलचलों से सम्बद्ध।'[१] अत: कहानी को उपन्यास की रीढ़ कहा गया है।

माचवे जी के कुछ नायिकाप्रधान उपन्यासों की नायिकाओं के अध्ययन के लिए प्रथमत: उन उपन्यासों का कथानक जानना जरूरी है। अत: माचवे जी के प्रमुख नायिकाप्रधान उपन्यासों की कथावस्तु आगे संक्षेप में प्रस्तुत की जा रही है --

---

१ डॉ.शांतिस्वरूप गुप्त - उपन्यास - स्वरूप,संरचना तथा शिल्प -पृ.क्र.६१।

## `आमा` --

`आमा` में नायिका आमा के जीवन की करुण कहानी अंकित है। माचवे जी ने इसमें नारी जीवन की शाश्वत समस्याओं को उठाते हुए अपना मानवतावादी दृष्टिकोण व्यक्त कर दिया है। आमा के जीवन में उसकी अपनी रोशनी होने के बावजूद भी वह दूसरे की रोशनी से दीपित है। यह नारी पुरुष जाति द्वारा प्रवंचित होने के बावजूद भी फिर उसीका अवलंब पाना चाहती है।

उपन्यास की नायिका आमा का विवाह चित्रकार, श्री से हो जाता है। श्री आमा का मन जानने से पहले ही आमा की देह का उपभोग करता है। अत: सुहागरात में ही आमा के मन में पति के प्रति एक प्रकार का अविश्वास, डर-सा बस जाता है। `अपरिचय तथा मन की अनिकटता में घटित यह देह-भोग आमा के लिए संत्रास देने वाला बन जाता है और उसका मन इस विवाह-संस्था से विद्रुब्ध हो जाता है।`[१] श्री भ्रमरवृत्ति का पुरुष है। वह आमा को अकेला छोड कर उसे बेबी के पालन-पोषण का उत्तरदायित्व दे कर, श्यामा के मोहजाल में फँस जाता है। उसके जीवन में नारी के प्रति निष्ठा-भाव का अभाव था। वह अपने आपको किसी एक नारी के प्रति समर्पित नहीं कर पाता, बल्कि केतकी, शु-चिन्, अमिता आदि तक अपनी नारी लालसा प्रकट करता है।

परित्यक्ता आमा को बार-बार अपने बालसखा ललाम की याद आती है। उसका मधुर व्यवहार बार-बार उसके मन में कौंधता है। पर ललाम देश के प्रसिद्ध नेता है और अब उसकी पहुँच से दूर है। अनन्तर आमा के जीवन में सत्यकाम आ जाता है। वह आमा को विवाह का आश्वासन देकर उसका समर्पण स्वीकार करता है। लेकिन वह भी आमा का उपभोग लेकर उसे पुत्ररत्न प्रदान कर प्रवंचित करके विदेश चला जाता है।

---

१ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान, विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध प्रबन्ध से उधृत - पृ.क्र.६०।

हर बार पुरुष से प्रवंचित आभा का मन घुटन से प्रपीड़ित होने लगता है। अन्दर ही अन्दर घुलती हुई वह अन्ततः दाय-ग्रस्त हो जाती है।[१] भुवाली सेनिटोरियम में अंतिम साँस गिनती हुई आभा एक लालसा मन में रखे हुए है कि, वह अन्तिम बार आँख मूँदने से पहले एक बार श्री को देख लें। अतः श्री को वह खत लिखती है कि वह शीघ्र ही आकर उसे मिले। पत्र पढ़कर श्री का मन परिताप की आँच में तप जाता है। वह आभा से मिलने के लिए बेचैन हो उठता है। लेकिन रास्ते में ही वह दुर्घटना-ग्रस्त होकर उसकी मृत्यु हो जाती है। आभा प्रिय-मिलन के अनन्त प्रतीक्षा की प्यास लिए ही मृत्यु को प्राप्त होती है।

निष्कर्ष --

उपन्यासकार ने आभा की मृत्यु को एक प्रश्न चिन्ह के रूप में ही नहीं बल्कि इससे भी बड़ा प्रश्न खड़ा किया है कि, क्या आधुनिक विघटनात्मक परिवेश में स्वातंत्र्योत्तर समाज में नारी-स्वतंत्रता का यही मूल्य है ? अर्थात् यह स्पष्ट है कि, आज भी नारी को समाज की जर्जर रूढ़ियों से सही अर्थों में मुक्ति नहीं मिली है।

एकतारा --

'एकतारा' में नारी के 'स्व-तंत्र' होने की छटपटाहट और इसमें आनेवाली समस्याओं का चित्रण उपन्यासकार ने बखूबी से किया है। माचवे जी नारी को 'शक्ति' मानते हैं। इस शक्ति के साथ पुरुषों ने कैसा खिलवाड़ किया है, यह दिखाना लेखक का प्रमुख उद्देश्य है। 'डॉ. माचवे का यह 'एकतारा' उपन्यास समाज की जर्जर, अप्रासंगिक और अभिशप्त रूढ़ियों को तोड़ने और अपने पैरों के नीचे एक दृढ़ स्थिर जमीन तलाशने की नारी की छटपटाहट को अत्यन्त सप्राण अभिव्यक्ति

---

१ डॉ. रणवीर नागर - डॉ. प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध प्रबन्ध से उधृत -- पृ.क्र. ६० ।

देता है।'[१] इसके साथ माचवे जी यहाँ और एक बात को स्पष्ट करना चाहते हैं कि 'आदमी और आदमी के बीच के रिश्ते आर्थिक ही है और वे इस युग में अधिकाधिक आर्थिक होते जा रहे हैं।'[२]

उपन्यास की नायिका तारा देश को अपना सर्वस्व मानकर, सन बयालीस की क्रांति में क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित होकर देश को स्वतंत्र कराने में योगदान करना चाहती है। इस कार्य के हेतु, उसे प्राय: रात-रात भर घर से बाहर रहना पड़ता है। उसके इस आचरण के कारण तारा के पिता उसकी विमाता द्वारा प्रोत्साहित करने पर तथा अपने व्यवसाय की सुरक्षा हेतु तारा को घर में रखने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। तारा घर छोड देती है। और अपने दल के साथी के घर में आश्रय लेना चाहती है। वह क्रांतिकारियों के संगठन में सुरेश को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखती है। जयन्त के प्रति तो उसके मन में अनुराग की भावना है। लेकिन सुरेश के चरित्र तथा जयन्त के उसके प्रति आचरण से उसे आघात पहुँचता है। इस बात से वह क्षुब्ध हो जाती है कि पुरुष नारी को मात्र भोग्या समझता रहता है। संगठन के कार्य के सिलसिले में उसे पुलिस द्वारा पकड़कर जेल भेज दिया जाता है।

सात महिनों के बाद, जेल से बाहर आने के बाद तारा स्वयं को बहुत अकेली और बेसहारा महसूस करती है। समय बिताने के लिए वह नाटक देखने जाती है। वही उसकी भेंट दीपेन्द्र से हो जाती है, जिससे एक बार लालबाग में मनोहर के मकान में मुलाकात हुई थी। दोनों विवाह-बद्ध हो जाते हैं।

---

१ रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं को उनका योगदान - विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध प्रबन्ध से उधृत -पृ.क्र.१०७

२ डॉ.प्रभाकर माचवे - एकतारा - पृ.क्र.७४।

9595
A

तारा ने जो स्वप्न देखा था - कि गाँव-गाँव में जाकर लोक-कला का विकास करेगी - टूट जाता है। तारा दो बच्चों की माँ बन जाती है। उन्हें आर्थिक तंगी महसूस होने लगती है और दीपेन्द्र विशृंखलित जीवन बिताने लगता है। वह शराब पीने लगता है। दीपेन्द्र उर्वशी नामक सिनेस्टार के मोहपाश में बँध कर तारा को तलाक की नोटिस भेज देता है। तारा जीवन में मिले अनुभवों के सहारे अन्ततः इस नतीजे पर आती है कि, आदमी और आदमी के रिश्ते सिर्फ आर्थिक ही है।

निष्कर्ष --

तारा अपने प्रति पुरुष की भोगवादी दृष्टि महसूस करके, इनसे बचने के लिए अकेले रहने की झटपटाहट करती है। लेकिन इस प्रयास में वह असफल हो जाती है। और वह विवाह करके शारीरिक,मानसिक और आर्थिक आधार पाना चाहती है। लेकिन यह आधार भी उसके पति की अर्थ के प्रति लालसा के कारण अस्थायी साबित होता है। इसप्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि सब रिश्ते आर्थिक संबंधों पर आधारित रहते हैं।

दर्द के पैबन्द --

` दर्द के पैबन्द ` नामक उपन्यास में दो नारियों की कथा अंकित है। उपन्यास की कथावस्तु दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खंड की नायिका ऋता, भारतीय नारी है, जो बडी आशाएँ रखकर एक विदेशी युवक से विवाहबद्ध हो जाती है। लेकिन वह उससे प्रवंचित हो जाती है। दूसरे खंड की नायिका रीटा एक विदेशिनी है, जो भारत का गौरवपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास पढकर बडी-बडी आशाएँ रखकर भारत आती है। लेकिन यहाँ आने के बाद उसका स्वप्नभंग होता है। इसप्रकार दोनों तरफ ` दर्द के पैबन्द ` है।

ऋता निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की लडकी है। घर में पिता शराबी, माता हमेशा बीमार रहती। साथ ही घर का आर्थिक ढाँचा दिन-ब-दिन गिरता जा रहा था। छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारियाँ भी ऋता ही को वहन

करती पड़ती है। घर की इस हालत के कारण ऋता अपने घर में अपने प्रियजनों के प्रेम से वंचित रह जाती है।

ऋता आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी स्कूली एवं कॉलेज की शिक्षा पूरी करती है। पढ़ाई में होशियार होने की वजह से उसे स्कॉलरशिप से थोड़ी-बहुत मदद मिलती रहती।

महाविद्यालयीन अध्ययन के दौरान ऋता का परिचय संस्कृत के विद्वान, वसुबन्धु से होता है। वह संस्कृत सीखने वसुबन्धु के पास जाती है। वह एक बेकार युवक है। दोनों में परिचय घनिष्ठ हो जाता है। घर में प्रेम से वंचित ऋता को वसुबन्धु से वात्सल्य एवं सहानुभूति मिलती है।

कॉलेज में ही ऋता का परिचय छात्र युनियन नेता रमेश से हो जाता है। ऋता भी युनियन की सदस्या बनकर युनियन को कामयाब बनाने के प्रयास में रमेश को साथ देती है। दोनों में निकटता शारीरिक सम्बन्धों तक बढ़ती जाती है। रमेश जन्म-जन्मान्तरों तक साथ देने का वायदा करता है और ऋता का समर्पण स्वीकार करता है। लेकिन बाद में उसे धोखा देकर अन्य युवतीसे विवाह करता है।

ऋता घर की आर्थिक दशा को सुधरने हेतु अपना उत्तर प्रदेश में स्थित छोटा-सा गाँव छोड़कर वसुबन्धु के साथ कलकत्ता चली जाती है। वहाँ उसे रोबर्तो के आर्डी नामक विदेशी ( इटालियन ) विद्वान को हिन्दी पढ़ाने का काम मिलता है। दोनों में घनिष्ठता बढ़ती जाती है। एक दिन ऋता वसुबन्धु से बता देती है कि, रोबर्तो उससे विवाह करना चाहता है। ऋता और रोबर्तो का विवाह वैदिक पद्धति से हो जाता है। विवाह के उपरान्त दोनों सुखपूर्ण जीवन बिताते हैं। ऋता एक पुत्र की माँ बन जाती है।

पुत्र के दो साल के होने के बाद ऋता शोध अध्ययन के लिए सामग्री इकट्ठा करने के हेतु गौहाटी जाती है। लौटने के बाद उसे ज्ञात होता है कि रोबर्तो पुत्र को साथ लेकर इटली भाग गया है।

ऋता अपने पुत्र, आनन्द की खोज में इटेली चली जाती है। वहाँ उसे यह जानकारी मिलती है कि रोबर्तो ने पुत्र आनन्द को पाँच साल के लिए, ऐसी शाला में भर्ती करा गया है, जहाँ दुनियाभर के अनाथ बच्चे पढते है। ऋता अपने पुत्र की प्राप्ति न कर अपने जीवन में आनन्द से वंचित हो जाती है।

दूसरे खंड की नायिका आस्ट्रेलियन युवती है। घर के अरुचिकर वातावरण के कारण रीटा के मन में घुमक्कडी के प्रति आकर्षण बढता है। अत: वह नर्सिंग की ट्रेनिंग लेती है। मिशन द्वारा उसकी नियुक्ति कलकत्ता के एक अस्पताल में हो जाती है।

रीटा ने कलकत्ते के निकट संथालों में चिकित्सा कार्य प्रारंभ किया। इसी समय वह रवीन्द्रनाथ द्वारा स्थापित शंातिनिकेतन भी देख लेती है। चिकित्सा कार्य के सिलसिले में उसकी भेंट स्थानीय कॉलेज में लेक्चरर, राज से होती है और दोनों विवाह कर लेते हैं।

राज की बहन प्रतिमा अपने कॉलेज में वसुबन्धु के भाषण से अभिभूत होकर उससे विवाह कर लेती है।

राज और रीटा सेवाग्राम तथा आसपास के गाँवों में घूमते हैं। शंातिनिकेतन और सेवाग्राम आश्रम देखने के बाद रीटा को यह अनुभव होता है कि, रवीन्द्रनाथ और गांधी के सौन्दर्य और शिव के प्रयोग बहुत जल्दी इतिहास की चीज बनते जा रहे हैं। ढाई-तीन दशकों में ही इन महनीय पुरुषों का योगदान लोग भूलते जा रहे हैं।

गाँवों में सब ओर एक-सी समस्याएँ नजर आती है। रीटा कहती है कि इनमें परिवर्तन और सुधार लाने के लिए उसका भौतिक, आर्थिक आधार बदलना चाहिए।

वसुबन्धु और प्रतिमा में सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। रीटा राज और माताजी के साथ पाँडिचेरी के अरबिन्द आश्रम पहुँच जाती है। वहाँ भी उसे यह बात ध्यान में आ जाती है कि, यहाँ भी ऊपरवाले पढे-लिखों की सफेद पोश दुनिया में और गरिबों आदिवासियों की अँधेरी दुनिया में बडी खाई है।

वसुबन्धु प्रतिमा से सम्बन्ध विच्छेद कर कृता के पास रोम चला जाता है। वहाँ दोनों के अनेक बार मिलने पर भी दोनों में औपचारिकता की दरी वैसी ही बनी रहती है। कृता सोचती है कि काश, यही अन्तर रोबर्तो से रखा होता।

निष्कर्ष --

उपन्यास में आद्यंत जीवन के कटु यथार्थों का उद्घाटन किया गया है। उपन्यास की दोनों नायिकाओं को यह बड़ी तीव्र अनुभूति होती है कि, भव्य-दिव्य भूतकाल अपने में समाए हुए ये दोनों ( भारत,इटली ) देश आज किस स्थिति में आ खड़े हुए हैं। आज दोनों ओर मनुष्य उतना ही लोभी,लालची,मद-भरा,कामी `जमीन` जोरु और जर` से चिपटा हुआ है।

लक्ष्मीबेन --

` लक्ष्मीबेन ` एक परित्यक्ता नारी की करुणाजनक कहानी है। उपन्यास की नायिका लेखा परित्यक्ता नारी है। उपन्यास का कथानक उसी के इर्द-गिर्द घूमता है।

पारिवारिक विघटन के कारण लेखा का अन्तर्मन बहुत ही पीड़ित एवं व्यथित है। लेकिन वह एक आधुनिक नारी होने की वजह से अपने बाहरी जीवन से अपनी व्यथा छिपाने की कोशिश करती है। इसी प्रयास में वह लेक्चरर से प्रोफेसर समाज सेविका,एम.एल.ए. बनती है। वह योगिनी और लेखिका भी बनती है। लेकिन व्यवसाय या कार्यक्षेत्र बदल डालने पर भी वह अन्तत: वही स्त्री रह जाती है। वह अपनी व्यथा भूल नहीं पाती उसे कहीं भी शांति और संतोष नहीं मिल पाता।

लेखा का विवाह पारम्परिक ढंग से हुआ है। उसका पति, वसंत जो ऊँचे पद पर वैज्ञानिक था, उसे शुरु-शुरु में सब तरह का प्रोत्साहन देता था। वह स्वयं व्यसनी था, दोस्त-दोस्तनें घर लाता था, रात-रात भर बाहर रहता। लेकिन उसी ने लेखा की दुश्चरित्रता को लेकर अफवाहें फैलायी। लेखा कहती है कि, पुरुष के लिए यह काम बड़ा आसान रहता है।

एक दिन अचानक वसंत उसके पाँच बरस के बेटे को, जो लेखा का इकलौता प्रेम का सहारा था, उठाकर चला गया। लेखा के जीवन में सूनापन छा गया।

परित्यक्ता लेखा अपना जीवन निर्वाह चलाने के लिए अपने मामा की सहायता से लेक्चरर बनती है। धीरे-धीरे वह अपनी योग्यता से प्रोफेसर भी बनती है।

अनन्तर लेखा समाज सेविका के रूप में काम करती है। इसके अतिरिक्त अन्य तीन क्षेत्रों - राजनैतिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक में काम करने बाद उसे यह महसूस होता है कि हर क्षेत्र प्रदूषण से ग्रस्त है। लेकिन लेखा जिस शांति एवं मन:स्वास्थ्य की तलाश में थी, वह उसे कहीं भी नहीं मिलता। उसका इकलौता पुत्र पानी में डूबकर मर जाता है।

निष्कर्ष --

लेखा के जीवन में अकेलापन बहुत ही अखरता है। परिवार का सुख वह चाहती थी, लेकिन उसका कुछ दोष न होते हुए भी वह उससे बेचिन हो जाती है। अपने जीवन के इस अधूरेपन की पूर्ति लेखा कहीं भी नहीं कर पाती। परिणामत: उसे जीवन में असंतोष के सिवा कुछ हाथ नहीं लगता।

कहाँ से कहाँ --

` कहाँ से कहाँ ` उपन्यास, विभाजन की समस्या को आधार मानकर लिखा गया है। यह विभाजन देश और घर के विभाजन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें दिल का विभाजन भी शामिल है। देश का विभाजन,मनोवृत्ति का विभाजन, मानसिकता का विभाजन,जाति-धर्म का विभाजन आदि विभिन्न विभाजित स्थितियों से घिरे पात्रों के माध्यम से विभाजन की भीषणता का चित्रण डॉ. माचवे जी ने किया है। साथ ही माचवे जी ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि, विभाजन के कारण राष्ट्र और प्रदेश कहाँ से कहाँ आ गये हैं।

उपन्यास के चार खंडों का नाम करण ` वि`, ` मा`, ` जि`, ` त ` इसप्रकार किया गया है, जो उपन्यास की प्रमुख समस्या को उद्घाटित करता है।

पात्रों के नाम भी इसी आधारपर रखे गये हैं, जैसे विभा, मास्कर, जितेन्द्र, तरंगिनी आदि।

कथानक की शुरुआत विभा से होती है। विभा दो विभिन्न ( पंजाब और बंगाल ) विभाजित प्रदेशों से आये हुए माता-पिता की सन्तान है। बचपन से ही वह विभाजन की विभिषिका से परिचित है। भारत और जर्मनी, दोनों देशों में स्थित विभाजन की समस्या उसे और भी व्यथित बनाती है। विभा चिकित्सा विज्ञान में उच्च अध्ययन के लिए बर्लिन गई है। वहाँ उसका परिचय बिल और मास्कर से होता है। प्रारंभ में उसका झुकाव मास्कर की ओर अधिक था। लेकिन उसकी स्त्रियों से खिलवाड़ करने की प्रवृत्ति से परिचय होने से वह उससे परावृत्त होती है। विभा बिल की ओर आकर्षित होती है लेकिन उनके विवाह के लिए बिल की माँ यह शर्त रखती है कि वह ईसाई धर्म स्वीकार कर ले। विभा ऐसा नहीं कर सकती।

अध्ययन समाप्त कर विभा नजमा के साथ भारत लौटती है। नजमा बिहारी है लेकिन विभाजन के कारण उसकी राष्ट्रीयता कहीं नहीं है। मास्कर भारत में कई तरह की वर्जनाओं और कुंठित मनोवृत्ति का शिकार है परिणामत: उसकी पश्चिम में जाकर यह धारणा दृढ हो गयी है, कि स्त्री एक काम-पूर्ति का साधन है। वह इसी धारणा के अनुसार तलाकशुदा फ्रेडा से विवाह करता है। उससे तलाक लेकर भारत में फिर नजमा से विवाह करता है और बाद में उससे भी संबंध विच्छेद कर लेता है।

विभा ग्रामसुधार एवं शिक्षा के लिए समर्पित जितेन्द्र से विवाह कर लेती है। दोनों ग्रामोद्योग आश्रम के माध्यम से गाँव में शिक्षा और लघु-उद्योग का प्रसार करते हैं।

निष्कर्ष --

दूर कहीं बज रहे राष्ट्रीय गीत के साथ जितेन्द्र का अतीत और वर्तमान का तुलनात्मक चिन्तन प्रभावशाली भावभूमि निर्मित करता है और ' कहाँ से कहाँ ' के तथ्य को स्पष्ट करता है। लाला लजपतराय और भगतसिंह का पंजाब, साधु वास्वानी और अमरडिनोमल का सिंध, दयानंद और सरदार पटेल का गुजरात,

छत्रपति शिवाजी और तिलक का महाराष्ट्र, रवीन्द्रनाथ, अरविन्द और विवेकानंद का बंगाल --- आज कहाँ से कहाँ पहुँच गया है। इसप्रकार परिवर्तन होता रहता है। लेकिन लेखक का आशावादी मन अब भी गवाही देता है कि मानव-मन में ऐसा कुछ है, जो अविभाजित रह जाता है। प्रदेशों का विभाजन कृत्रिम आधारपर होता है लेकिन अन्ततः मानव हृदय सभी जगह एक है।

## निष्कर्ष --

डॉ.माचवे जी ने अपने नायिका प्रधान उपन्यासों के माध्यम से नारी - जीवन की शाश्वत समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। समस्याओं के आर पार जाने की क्षमता, वास्तविकता पर पड़े आवरणों को तोड देने की ताकत और मनुष्य की चिन्ता उनके इन उपन्यासों में स्पष्टतः दृष्टिगत होती है। प्रस्तुत नायिका प्रधान उपन्यासों में यही बात स्पष्टतः लक्षित होती है।

`छाया` में नारी जीवन की चिरन्तन समस्या को उठाया गया है। युगों युगों से रूढियों की श्रृंखला में बँधी नारी आज भी अपनी मुक्ति नहीं कर पा रही है। पुरातन जड मूल्यों के जाल में आज भी वह रूढिगत होकर उलझती है। वर्तमान समाज में जहाँ स्त्री-पुरुष समानाधिकार की बात की जाती है वहाँ पुरुष लाख अपराध करने के बाद भी उजले माथे से समाज में घूमते हैं, लेकिन नारी का उठा हुआ एक भी गलत कदम समाज के प्रचंड रोष एवं निंदा का कारण बनता है।

अतीत की मिथ्या जकडन और वर्तमान की अस्थिर मूल्यवत्ता में नारी टूटती जा रही है। मनु ने नारी को शंका की दृष्टि से देखा, उसकी सारी स्वतंत्रता छीनकर उसे ऐसे नियमों में जकड दिया, कि नारी वस्तुके अतिरिक्त कुछ बच न सके, उसकी अस्मिता का प्रश्न ही न उपस्थित हो। लेकिन इसका परिणाम आज भी नारी भुगत रही है।

`एकतारा` की तारा अपने जीवन की डोर अपने हाथ में लेने के लिए छटपटा रही है। वह समाज की अप्रासंगिक, जर्जर रूढियों को तोड डालने की जी तोड कोशिश

कर रही है। कानून द्वारा स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार दिए जाने की बात बड़े ही जोर-शोर के साथ की जाती है। लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार में आज भी हर जगह पर इनमें भेदभाव बर्ताया जाता है। तारा के मन में यह सवाल बार बार उभरता है कि, पुरुष अकेले रह सकते हैं, लेकिन नारी अकेली क्यों नहीं रह सकती ? इसी अकेले रहने की प्रक्रिया में नायिका तारा टूटती जाती है।

` दर्द के पैबन्द ` उपन्यास का शीर्षक ही उपन्यास के तथ्य को बखूबी ढंग से उद्घाटित करता है। इसमें भारतीय संस्कृति में पली हुई, नायिका कृता का विवाह पाश्चात्य युवक से हो जाता है। और इस प्रकार पूर्व और पश्चिम के द्वंन्द्व से कृता का जीवन` दर्द के पैबन्द ` बन जाता है।

दूसरी नायिका, रीटा भारत के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास से आकर्षित होकर भारत में आ जाती है। लेकिन यहाँ आकर उसका स्वप्नभंग हो जाता है। वह देखती है कि, रवींद्र ,अरविन्द और गांधीजी आदि महापुरुषों के ` चेलों के ` लकीर के फकीर पन ` के कारण इनके सौन्दर्य,शिव और सत्य के प्रयोग लोग भूलते जा रहे हैं। भारत के ग्रामीण प्रदेशों में फैले अज्ञान, दारिद्र्य और रूढिग्रस्तता के कारण रीटा के जीवन में भी निराशा ग्रस जाती है।

` लक्ष्मीबेन ` आधुनिक विघटनात्मक समाज में दोहरा जीवन जीनेवाली परित्यक्ता की करुणाजनक कहानी है। पारिवारिक विघटन के परिणाम स्वरूप लेखा का अन्तर्मन पीड़ित एवं व्यथित है। लेकिन वह एक संकल्पवान और आधुनिका नारी होने की वजह से अपना भीतरी पीड़ित एवं यातनामय जीवन वह समाज से छिपाना चाहती है। इसी प्रकार के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के द्वंन्द्व में वह टूट गयी है।

` कहाँ से कहाँ ` की नायिका विभा विभाजन की समस्या को लेकर व्यथित है। यह विभाजन न सिर्फ देश और घर के विभाजन तक ही सीमित नहीं, बल्कि मन का विभाजन भी इसमें शामिल है। आज, जहाँ एक ओर विश्वबंधुत्व और एकात्मकता के नारे लगाए जाते हैं, वहीं-जात-पांत,राष्ट्रीयता आदि कृत्रिम दीवारें डालकर अलगाववादी ताकतें कार्यशील हैं। लेकिन लेखक का आशावादी मन कहता है

कि मानव में अभी ऐसा कुछ है, जो अविभाजित है। वहीं अब भी कुछ आशा है।

माचवे जी के प्रस्तुत नायिकाप्रधान उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि उन्होंने इन नायिका प्रधान उपन्यासों में नारी - जीवन की शाश्वत समस्याओं का उद्‌घाटन बडी ही सफलता के साथ किया है। इन उपन्यासों की नायिकाएँ प्राचीन रूढिगत श्रृंखलाओं से मुक्ति पाने तथा शाश्वत जीवन मूल्यों की तलाश करने में प्रयत्नरत हैं।